जल सहेलियां, पानी और परमार्थ

जल सहेलियां
पानी और परमार्थ

Written By
Kumar Bhavesh Chandra

Concept By
Santosh Kumar Srivastava

Photography
Amit Mishra and Jay Prakash

Layout & Designing
Ali Raza

Printing
Jubilee Media Venture's LLP

Production
Creativeyes Entertainment Media Pvt Ltd.

Publisher
Parmarth Samaj Sevi Sansthan

Under The Project of
Securing Land and Water Rights for marginalized communities through people led advocacy (IND-1359)

मेरी बात...

परमार्थ समाजसेवी संस्थान के द्वारा जल सहेली की अवधारणा और इनके निर्माण की प्रक्रिया यूं तो 2011 में प्रारम्भ हुई। शुरूआत के दिनों में जल सहेलियों को पितृसत्तात्मक सत्ता और रूढिवादी समाज की तमाम तरह की यातनाओं का सामना करना पडा। लेकिन जज्बा व साहस उनका गजब का है जिन्होनें तमाम समस्याओं का सामना करते हुए अपने काम की नई इबारत लिखी। जमीनी स्तर पर उन्होनें जो काम किए हैं वे सराहनीय ही नहीं प्रेरणादायक भी हैं। परमार्थ ने जल सहेलियों को दक्ष और प्रशिक्षित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन किया। जिसके लिए गांव गांव में वाटर स्कूल और सामूहिक रूप से जल पाठ्यक्रम तैयार किया। जल सहेलियों ने बुंदेलखण्ड के सैकडों गांव को पानीदार बनाने का प्रयास किया है जिसके परिणाम परिलक्षित हो रहे है। कई गांव में तो वर्षपर्यन्त की पेयजल सुरक्षा सुनिश्चित हो गई। कई गांव में अभी और अधिक काम करने की जरूरत है। लेकिन जिस प्रकार से जल सहेलियां बिना किसी आर्थिक लाभ और व्यक्तिगत स्वार्थ के गांव को पानीदार बनाने में लगी हुई है। उनके किस्से व कहानी स्थानीय स्तर पर तो चर्चा में है ही लेकिन इनके काम की गूंज अब दिल्ली तक सुनाई देने लगी है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 28 फरवरी को मन की बात में जल सहेली बबीता की कहानी सुनाकर सभी जल सहेलियों का उत्साहवर्धन किया। जल सहेलियों के प्रयासों से समाज को परिचित कराने के लिए परमार्थ समाजसेवी संस्थान कॉफ़ी टेबल बुक का प्रकाशन कर रही है। आशा है कि आप सबको यह प्रयास पसंद आएगा।

इसी आशा व उम्मीद के साथ

संजय सिंह
सचिव
परमार्थ समाजसेवी संस्थान

पानी की जंग और जल सहेलियां

देश और पूरी दुनिया इस वक्त कोविड 19 के संक्रमण से गुजर रही है। ऐसे में हमें कहा जा रहा है कि संक्रमण से बचने के लिए दो गज की दूरी और मास्क का इस्तेमाल बहुत जरूरी है। इसके साथ ही यह भी हिदायत है कि अपने हाथ को साफ पानी से बार बार धोएं। इन सबके बीच एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि देश की 50 फीसदी आबादी के पास पीने का साफ और सुरक्षित पानी नहीं। तकरीबन 2 लाख लोगों की मौत इसलिए होती है क्योंकि साफ और सुरक्षित पानी तक उनकी पहुंच नहीं बन पा रही है। इससे भी कड़वी हकीकत है बुंदेलखंड की। बुंदेलखंड हिंदुस्तान के दिल में बसा ऐसा भूभाग है, जिसके माथे पर सूखे का कलंक लिख दिया गया है।

1971 के बाद खराब हुए हालात

यह वही बुंदेलखंड है जो 1971 के देशव्यापी सूखे में भी उतना संकट में नहीं था, जितना देश के बाकी हिस्सों में पानी की परेशानी थी। लेकिन जल संरक्षण में लापरवाही और जलाशयों के अतिक्रमण के सतत सिलसिले ने बुंदेलखंड के माथे पर पानी की किल्लत का कलंक लिख दिया। देश के कई इलाकों में पानी और पीने के साफ पानी की किल्लत है लेकिन बुंदेलखंड इसके लिए सबसे अधिक दुष्प्रचारित दुर्गम इलाका है जहां आज पानी के लिए लोगों को मीलों पैदल चलना पड़ता है। तमाम सरकारी प्रयासों के बाद पानी की परेशानी से निजात नहीं मिली है।

बुंदेलखंड का दर्द और महिलाएं

बुंदेलखंड का क्षेत्र भारत के दो राज्यों की सीमाओं में विस्तार पाता है। प्राकृतिक रूप से बेहद सुंदर होने के बाद पानी की अनुपलब्धता या कमी यहां के लोगों के लिए जीवन को मुश्किल बनाता है। हालांकि इतिहास में दर्ज है कि पानी की ये समस्या यहां कुछ दशकों पुरानी ही है। कहते हैं चंदेल शासकों ने यहां जगह-जगह काफी तालाब बनवाए थे। पूरे क्षेत्र में 9000 के आसपास तालाब थे लेकिन इनके रख-रखाव में लगातार लापरवाही और अतिक्रमण की वजह से इन तालाबों की संख्या 2000 से भी कम रह गई है। हालत ये है कि गर्मियां शुरू होते ही कई इलाकों के लोग पानी के लिए भटकने लगते हैं। इसकी सबसे बड़ी मार यहां की महिलाओं पर पड़ती है। घर के कामकाज से लेकर सिंचाई के लिए पानी की दिक्कत इन महिलाओं के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं।

बुंदेलखंड की नई पहचान यही है कि तमाम प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद यहां विपन्नता और बदहाली लोगों के जीवन का हिस्सा बन चुका है। अपार खनिज संपदा से भरपूर इस क्षेत्र में गरीबी और अशिक्षा ही आज इसकी पहचान है। इन्हीं परिस्थितियों ने बुंदेलखंड को बागियों की धरती भी बना दिया। आल्हा उदल की धरती अब बीहड़ों की पहचान में बदल गई। घर की जरूरत के लिए पानी की तलाश में मटके सिर पर लिए मीलों दूर जा रही महिलाओं की तस्वीर बुंदेलखंड की पहचान बन गई। जिसके जीवन का आधा समय पानी की तलाश और इंतजाम में ही खर्च हो जाता हो, वहां खुशहाली कैसे आ सकती है। बुंदेलखंड के इस दर्द को समझते हुए परमार्थ समाजसेवी संगठन ने इस सामाजिक तस्वीर को बदलने का बीड़ा उठाया। महिलाओं को इस दर्द से मुक्ति दिलाने का सपना संजोया। ...और एक अभियान की शुरुआत हुई।

STRENGTHENING FOOD, NUTRITION SECURITY AND WASH
SYSTEMS TO MITIGATE COVID 19 PANDEMIC PROJECT
GENDER AND VAW ORIENTATION
Date-
Place- Hotel Rani Veerangana, Jhansi

परमार्थ की कोशिशों ने बदले हालात

अशिक्षा और अज्ञानता के अंधेरे में डूबे लोगों वाले बुंदेलखंड में आत्मविश्वास जगाकर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना इतना आसान भी नहीं था। सामंतवादी सोच और पितृसत्ता के प्रभाव से निकालकर महिलाओं को सामाजिक कार्यों से जोड़ना बेहद मुश्किल था। लेकिन कहते हैं न कि जहां चाह वहां राह। जब कोई कुछ ठान लेता है तो रास्ते निकल ही आते हैं। रास्ता निकला भी। घूंघट में कैद महिलाएं सामाजिक वर्जनाओं और मान्यताओं को त्यागकर घर से बाहर निकलने को तैयार हुई, संघर्ष करने और आगे बढ़ने का प्रण लिया। परमार्थ ने बुंदेलखंड के कुछ क्षेत्र को अपने प्रयोग के लिए चुना। तय हुआ कि इस इलाके में बदलाव की एक तस्वीर पेश की जाएगी। सबसे पहले पानी की किल्लत से जूझ रहे जालौन, हमीरपुर और ललितपुर जिले को इस अभिशाप से मुक्ति दिलाने के अभियान की शुरुआत हुई।

महिलाओं पर किया फोकस

परमार्थ के अपने अध्ययन से तस्वीर साफ थी। इस जल समस्या की सबसे बड़ी शिकार थीं महिलाएं। और इसीलिए संस्थान ने क्षेत्र की महिलाओं को साथ लेकर इस अभियान को आगे बढ़ाने की ठानी। महिलाओं को इसके लिए आगे आने को प्रेरित करना इतना आसान नहीं था। सामाजिक संकोच से उबारकर उन्हें चौखट से बाहर सामाजिक कार्य के लिए प्रेरित करना मुश्किल था। लेकिन परमार्थ ने तो ठान ही लिया था कि इसे अब किसी हाल में करना है। सो ग्रामीण महिलाओं के साथ संवाद का सिलसिला शुरू किया गया। उनकी परेशानियों के निदान और उसके लिए की जाने वाली कोशिशों पर बातचीत शुरू हुई। उन्हें बताया गया कि उनकी अपनी कोशिशें उन्हें इस समस्या के दलदल से बाहर निकाल सकती हैं। उनके भीतर ये आत्मविश्वास जगाया गया कि उन्हें अपने बच्चों और परिवार की खुशहाली के लिए इस काम को अपने हाथ में लेना ही होगा। उम्मीद की रौशनी ने राह दिखाई और कुछ महिलाओं ने इस काम के लिए बाहर निकलने का साहस जुटाया।

महिलाओं की मेहनत काम आई

अब इन साहसी महिलाओं के सामने भी समस्याएं कम नहीं थी। समाज के ताने और तोहमतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा था। उनके आत्मविश्वास और उम्मीदों को रौंदने की कोशिशें भी अंतहीन थीं। लेकिन परमार्थ की सतत प्रेरणा ने उन्हें मंजिल तक आगे बढ़ने का साहस दिया और जब कामयाबी करीब आने लगी तो इन महिलाओं की आंखों की चमक और चेहरे की मुस्कान ने प्रगति के द्वार खोल दिए। इलाके की बाकी महिलाओं में भी आत्मविश्वास और सहयोग की भावनाएं बढ़ने लगी। एक से एक ग्यारह होकर महिलाओं ने इस क्षेत्र की तस्वीर और अपने परिवार की तकदीर बदल दी। आज बुंदेलखंड के जालौन, हमीरपुर और ललितपुर की तस्वीर बुंदेलखंड के दूसरों जिलों से अलग है।

कैसे किया बदलाव

परमार्थ ने इन महिलाओं को न केवल सामाजिक जिम्मेदारियों का अहसास कराया बल्कि उनके अपने वजूद को समझने का साहस दिया। परमार्थ से जुड़ी इन महिलाओं को जल सहेली कहा गया। उनको न केवल श्रमदान के लिए प्रेरित किया गया बल्कि अपने अधिकारों के प्रति भी सजग किया गया। सरकारी योजनाओं और अपने नागरिक अधिकारों का लाभ उठाते हुए उन्हें अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए आगे आने को प्रेरित किया गया। ये जल सहेलियां आज अपने इलाके में जल संरक्षण के लिए न केवल तालाब, कुएं और चेक डैम बनाने में श्रमदान करती हैं बल्कि जिला और तहसील मुख्यालयों में जाकर सरकारी योजनाओं के जरिए अपने क्षेत्र में विकास को सुनिश्चित करती हैं। इनकी कहानियां बहुत ही दिलचस्प है और प्रेरक भी। ये पत्थर से पारस बन जाने जैसा है, जिसने बुंदेलखंड के जीवन को प्रभावित किया है, जिसने बुंदेलखंड की पहचान को बदलने का काम किया है।

सूखे का इतिहास है पुराना

बुंदेलखंड और सूखे का रिश्ता इतना पुराना है कि यहां के जनजीवन ने इस संघर्ष को स्वीकार कर लिया है। बुंदेलखंड के साथ सन् 1809-10 के सूखा और अकाल का इतिहास भी जुड़ा है। इसके अलावा बुंदेलखंड में 1867 से 1892 के बीच तकरीबन 25 सालों तक ऐसी ही परिस्थितियों का सामना किया है। इस समस्या का सामना बुंदेलखंड ने तब भी किया जब हम सभी 21वीं सदी में पहुंचकर तरक्की की बातें कर रहे थे।सदी की शुरुआत में तो बुंदेलखंड को लगातार आठ साल तक सूखे का सामना करना पड़ा। जल संकट से रू ब रू बुंदेलखंड में एक कहावत बहुत मशहूर है, "गगरी न फूटे खसम मर जाए" समझा जा सकता है पानी की कीमत किसी औरत के पति की जिंदगी से अधिक होने का क्या मतलब है? इसीलिए जल संकट से जूझ रहे बुंदेलखंड में पानी को लेकर हालात बदलने की जल सहेलियों की उपलब्धि को चांद पर पहुंचने जैसा माना जाता है।

पानी पर महिलाओं का पहला हक

परमार्थ ने इतिहास के इसी परिप्रेक्ष्य को समझते हुए पानी पर 'महिलाओं का पहला हक' अभियान को आगे बढ़ाने की ठानी। इस सोच को आगे बढ़ाते हुए परमार्थ के स्वयंसेवियों ने जल संकट से जूझ रहे गांवों की ओर रुख किया और उन महिलाओं से संपर्क बनाया जो इस समस्या से सबसे अधिक पीड़ित हैं। पारंपरिक पुरुष सत्तात्मक समाज की महिलाओं को आगे बढ़कर सामाजिक जिम्मेदारी के लिए तैयार करने का काम न केवल जटिल था बल्कि मुश्किल भी। लेकिन दृढ़निश्चय से हर काम आसान हो जाता है और हुआ भी। सामाजिक-पारिवारिक बंधनों से मुक्ति की ओर कदम बढ़ाते हुए कुछ महिलाओं ने परमार्थ की पहल पर नए संघर्ष के लिए कदम बढ़ा दिए। जल सहेलियों के अनुभव बताते हैं कि सभी ने इस ऐतिहासिक फैसले के बदले सामाजिक ताने और आलोचनाओं को सहा है। उन्हें हतोत्साहित किया गया, उन्हें भरमाया गया, उन्हें डराया गया। लेकिन वे तय कर चुकी थी कि अब वे एक कदम भी पीछे नहीं हटने वालीं, और यही किया भी।

जल सहेलियों की अनोखी दास्तान

यही वो जल सहेलियां हैं, जिन्होंने बुंदेलखंड के नाम के साथ चस्पां पानी की किल्लत का कलंक मिटाने में अहम भूमिका निभाई है, एक नई नज़ीर पेश की है, मिसाल बन गई हैं। इन्हीं जल सहेलियों ने बुंदेलखंड में अपनी मेहनत, ताकत और हौसले से बंजर भूमि पर महिलाओं के जज्बे की नई इबारत लिखी है। इनकी मुस्कान में छिपी है बुंदेलखंड की महिलाओं की नई सोच, नई ऊर्जा और नई उम्मीद...। इन्होंने धरती का सीना चीरकर पानी के लिए रास्ता बनाया है... पहाड़ों से लड़कर अपने लिए पानी का इंतजाम किया है...ये बुंदेलखंड में दशरथ मांझी की अवतार हैं..बुंदेलखंड के साहस और हिम्मत की पहचान हैं।

पानी के लिए पत्थरों से मुकाबला

बुंदेलखंड के पथरीले पहाड़ों को काटकर पानी का इंतजाम..कोई आसान नहीं था...लेकिन इनकी हिम्मत और ताकत ने बुंदेलखंड की छाती पर स्वाभिमान की नई कहानी लिख दी है। इन्होंने सूखे बुंदेलखंड की प्यास बुझाने का मंत्र तलाश लिया है...पानी की किल्लत से निजात पाने का रास्ता दिखाया है..। निर्झर पानी का ये स्रोत बुंदेलखंड के लिए सपने सा था...पथरीले पहाड़ों से सरककर पानी दूर निकल जाता था..आम आदमी की पहुंच से दूर। लेकिन इन्होंने तय कर लिया कि प्रकृति से मिले सीमित जल के एक एक बूंद को इस्तेमाल के लायक बनाकर वह बुंदेलखंड की नई तकदीर लिखेंगी। जरूरी काम के लिए पानी जुटाना एक ऐसा कार्य था जिससे वह लंबे समय से जूझ रही थी। और इसीलिए वे पानी के हर बूंद का महत्व तो जानती ही थीं।

घर और बाहर एक साथ संघर्ष

यह भी एक विचित्र त्रासदी है कि महिलाएं घर के बाहर कितना भी काम कर ले, घर के भीतर का काम उसे संभालना ही होता है। फिर ये तो बुंदेलखंड के पिछड़े समाज की महिलाएं थी। उनके लिए तो संभव ही नहीं था कि वे घर बार छोड़कर केवल पानी बचाने के अभियान में जुट जातीं। उन्होंने अपने घरेलू कामकाज से समय निकालकर पानी जुटाने के इस अभियान की ओर कदम बढ़ा दिया। परमार्थ के स्वयंसेवियों ने उन्हें जो भी रास्ता दिखाया उसपर चलकर उन्होंने बदलाव की ऐसी तस्वीर पेश की है महिलाओं का यह कारवां कमाल करने लगा...बदलाव के लिए नई ऊर्जा का संचार होने लगा है।

श्रम से बदले हालात

जालौन, हमीरपुर और ललितपुर की इन जल सहेलियों ने ठान लिया था कि वे अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ने के लिए किसी भी तरह कोई समझौता नहीं करेंगी। इसीलिए इन्होंने न केवल अपने इलाके को पानीदार बनाने के लिए परमार्थ की योजनाओं के अनुरूप श्रमदान किया बल्कि प्रेरक का भी काम किया। एक से एक मिलकर ग्यारह होती जल सहेलियों ने कुंए खोदने से लेकर चेक डैम बनाने में श्रमदान कर इलाके की तस्वीर बदल दी। अपने संघर्ष की कहानी बताते हुए इनके चेहरों पर अनायास ही खुशी की लहर दौड़ जाती है।

इनकी बोली में है साहस का सूत्र

जल सहेलियां बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की तरह नया इतिहास रचने में अपनी भूमिका की सराहना से गदगद हैं। इनके जज्बे की आज हर कोई सराहना करता है। पथरीले पहाड़ों से लड़ने के इनके साहस को सलाम करता है। पानी के लिए इनके संघर्ष की कहानियां इलाके की दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरणा का पुंज बन गई हैं। ये जल सहेलियां अपने क्षेत्र में हिम्मत और साहस का पर्याय बन चुकी हैं।

गांव की महिलाओं ने की पहल

ये हैं शारदा... विजयपुरा की रहने वाली हैं..ये खुश हैं कि इन्होंने परमार्थ के साथ मिलकर अपने इलाके में पानी की समस्या को कम करने में बड़ी भूमिका निभाई है। बरुआ नाले के पानी को रोकने के लिए इन्होंने काफी मेहनत की..अब नतीजा सामने है..पशु पक्षी के लिए पीने का पानी है और लोग इसमें नहाते भी हैं.. शारदा बताती हैं कि शुरुआत में घरवालों ने मेरे घर से बाहर निकलने को लेकर विरोध किया। लेकिन मुझे विश्वास था कि परमार्थ ने जो रास्ता दिखाया है हमे, उससे हमारी जिंदगी में बड़ा बदलाव आने वाला है। हुआ भी यही। जब स्थितियां बदलने लगीं तो लोगों ने साथ देना शुरू कर दिया। घरवाले भी अब खुश हैं कि मैंने कोई अच्छा काम किया है।

महिलाओं ने मिलकर बनाया बांध

शारदा की तरह कुसुम ने भी बरुआ नाले को पानीदार बनाने के लिए जीतोड़ मेहनत की है..ये खुश हैं कि उनसभी की मेहनत की वजह से आज इलाके में सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध है। लोगों की दिक्कतों के समाधान करने की कुसुम की खुशी उनके चेहरे पर स्थायी भाव ले चुकी है। शारदा कहती हैं, हमारे गांव में पानी की बड़ी समस्या थी। इसी दौरान हम और गांव की कुछ महिलाएं परमार्थ संस्था के संपर्क में आईं। उन्होंने हमें जो रास्ते बताए, हम उनपर काम करने लगे और अब हमारे गांव में पानी की समस्या बहुत हद तक कम हो गई है। हमने पानी को रोकने के लिए बोरियों में मिट्टी भर भर के उसकी सिलाई की और उससे बांध बना दिया। अब हमारे गांव में जानवरों और पक्षियों के लिए पीने का पानी उपलब्ध हो गया है। सिंचाई के लिए भी पानी है। हमें लगता नहीं था कि ये समस्या कभी खत्म होगी। लेकिन परमार्थ ने हम सभी को जो रास्ता दिखाया उसपर चलकर आज हम पानी के मामले में आत्मनिर्भर होते जा रहे हैं।

चार महीने में कुंआ खोद डाला

इमरती की कहानी तो गजब ही है। इन्होंने परमार्थ की प्रेरणा और सहयोग से अपने इलाके में कुंआ खोदने की ठान ली... चार महीने के संघर्ष के बाद ये अपने मकसद में तो कामयाब हो गईं... लेकिन इन चार महीनों में उन्होंने इलाके के लोगों का उपहास सहा... धमकियां झेलीं... लेकिन अपने इरादे से डिगी नहीं... आज इनके चेहरे पर अपने काम में कामयाब होने का संतोष और आत्मविश्वास कोई भी पढ़ सकता है। इमरती बताती हैं कि मेरे गांव में पानी की हालत ये थी कि कीचड़ वाले पानी को हम बर्तन में निथारकर और छानकर उपयोग में लाया करते थे। हमने इसी को अपनी नियति मान ली थी लेकिन परमार्थ के लोगों के संपर्क में आई तो रास्ता दिखने लगा। उन्होंने हमें सीमेंट और दूसरे साधन उपलब्ध कराए। खुद ही मेहनत के लिए प्रेरित किया। हम गांव की महिलाओं ने कुंआ खोदने के लिए खुद ही कुदाल उठाई और कुंआ खोदना शुरू किया तो कुछ लोगों को ये बात बुरी लगने लगी। उनकी ओर से धमकियां आने लगीं। हमारे लोगों को पीटा भी गया लेकिन गांव की महिलाओं ने ठान लिया कि अब हम रुकेंगे नहीं। हम चार-पांच महिलाएं मिलकर लगभग चार महीने तक कुंआ खोदती रहीं फिर बाद में गांव के पुरुषों ने भी साथ दिया और हम कुंआ खोदने में कामयाब हो गए। इस दौरान लोगों ने हमारी खूब हंसी भी उड़ाई गई। लेकिन हमने उसपर ध्यान नहीं दिया। हमने जो ठाना था उसे पूरा किया और अब हमें पीने के पानी के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

एक कामयाबी के बाद अगला संघर्ष

इमरती और उनके साथ की महिलाओं ने गांव में कुंआ खोदने के बाद भी पानी के लिए संघर्ष को रुकने नहीं दिया। उन्होंने परमार्थ के सहयोग से इलाके में एक चेकडैम का भी निर्माण किया ताकि इलाके में पानी की समस्या न रहे। इमरती कहती हैं कि पानी के संघर्ष करते हुए हमें केवल धमकियां नहीं मिली। हमारी पिटाई भी हुई। लेकिन शाम में हम पिटते और अगली ही सुबह हम कुंआ खोदने निकल जाते। एक जिद सी आ गई थी कि हमें ये हालात बदलने हैं। हमे परमार्थ की ओर से पूरा सहयोग और प्रेरणा मिल रही थी, इसलिए हम सारी दिक्कतों को पीछे छोड़ते हुए कामयाब रहे। इमरती कहती हैं कि हम और हमारी सहेलियों ने अपने पड़ोस के गांव में भी चेकडैम बनाने में मदद की। अपने गांव के अलावा दो और चेकडैम बनवाने का गर्व भारती के चेहरे पर साफ दिखता है।

हमारी मेहनत और उनकी प्रेरणा ने बदल दी जिंदगी

तालबेहट के बदाउनी की आदिवासी समुदाय की सुनीता की तो जिंदगी ही बदल गई..घर में सीमित रहने वाली सुनीता ने जल सहेली के रूप में अपने पास पड़ोस की महिलाओं के साथ मिलकर अपने इलाके के पास के नहर से अपने गांव तक पानी के लाने के लिए पहाड़ों की खुदाई की। इलाके के तालाब गर्मियों में सूख जाते थे। उनमें पानी ही नहीं रहता था। लेकिन इन्होंने जब नहर से रास्ता बनाकर उसमें पानी के आने का इंतजाम कर दिया तो यह समस्या जाती रही। महिलाओं की इस कोशिश से इलाके का जलस्तर काफी सुधरा है। हैंड पंपों से भी पानी आने लगा। पहले गर्मियों में सभी हैंड पंप सूख जाते थे। लेकिन परमार्थ के लोगों के साथ मिलकर इलाके की महिलाओं ने ऐतिहासिक काम कर डाला। पत्थर का सीना चीरकर इन्होंने अपने लिए पानी का इंतजाम किया है। वे इसका पूरा श्रेय परमार्थ और उनके लोगों की प्रेरणा को देना चाहती हैं। उन्होंने बताया कि हमारी मेहनत और उनके मार्गदर्शन ने आज इस इलाके की तस्वीर बदल दी।

सामाजिक रुढ़ियों से लड़ना भी सिखाया

कलोथरा की मीरा की कहानी तो और भी दिलचस्प है..मीरा और उनकी सहेलियों ने परमार्थ से ट्रेनिंग और प्रेरणा पाकर न केवल अपने इलाके में पानी की समस्या से निजात पाने में कामयाबी पाई बल्कि सामाजिक रुढ़ियों से लड़कर महिलाओं के लिए आजादी हासिल की। उनके गांव में महिलाओं को चप्पल पहनकर बाहर निकलने की आजादी नहीं थी। महिलाओं का पैर में चप्पल डालकर घर से निकलना बहुत बड़ा सामाजिक अपराध माना जाता था। काम पर निकलने वाली महिलाएं हाथ में चप्पल लेकर गांव से बाहर निकलती थी और गांव के बाहर जाने पर ही वे अपने पैरों में चप्पल डाल पाती थीं। मीरा कहती हैं कि बच्चे वाली महिलाओं के लिए यह समस्या और बड़ी थी कि वे चप्पल संभाले कि अपने बच्चे को। मीरा और उनके साथ की जल सहेलियों ने इसके खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी। उत्साह से भरी मीरा कहती हैं, अब हम औरतें अपने घर से चप्पल पहनकर बाहर निकलती हैं।

परमार्थ की ट्रेनिंग ने हमारा हौसला बढ़ाया

मीरा बताती हैं कि उनके गांव में केवल एक हैंडपंप था जिससे खारा पानी आता था। लेकिन जब हम परमार्थ के संपर्क में आए तो हमें पानी की इस समस्या से उबरने का रास्ता सुझाया गया। उन्होंने हमारी आर्थिक मदद भी की और अन्य लोगों से सहयोग लेने का तरीका भी बताया। हम सबने मिलकर गांव में चंदा भी इकट्ठा किया और फिर मिल जुलकर नया हैंड पंप लगाया। इस हैंडपंप से साफ और मीठा पानी आता है। परमार्थ की प्रेरणा से यह सब संभव हुआ तो हमें समझ में आने लगा कि मिलजुल कर किसी काम को करने से जिंदगी को आसान बनाया जा सकता है। समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। अब हम गांव की महिलाएं मिलकर इसी तरह का संदेश अपने पड़ोस के गांवों में देती हैं ताकि वे भी उन समस्याओं से निजात पाने के लिए सामूहिक प्रयास करें। परमार्थ की ट्रेनिंग न होती तो हमें ये हौसला नहीं मिलता। अब तो हम मनरेगा और सभी तरह की सरकारी योजनाओं का काम पाने की लड़ाई करने तहसील दफ्तर जाने में नहीं हिचकती हैं।

हौसले से मिले हुनर ने बनाया आत्मनिर्भर

कलोथरा गाँव की ही गणेशी से बात करते हुए साफ हो जाता है कि परमार्थ से प्रेरणा पाकर बुंदेलखंड की जल सहेलियों ने जो आत्मविश्वास हासिल किया उससे उनकी आधी समस्याएं समाप्त हो गई। गणेशी कहती हैं कि हमारें गांव का हैंडपंप जब खराब हो जाता था तो महीनों उसकी मरम्मत नहीं हो पाती थी। हम वैसे ही पानी की किल्लत से जूझते हुए बड़े हुए हैं। हैंडपंप रहते हुए पानी की समस्या झेलना एक अलग तरह का अभिशाप था। लेकिन परमार्थ ने हम जल सहेलियों को हौसला दिया, हिम्मत दी और हुनर भी। अब हम जल सहेलियों ने खुद ही हैंड पंप की मरम्मत करना सीख लिया है। इस आत्मनिर्भरता ने हमारी जिंदगी बदल दी है। हम जल सहेलियां एक दूसरे का हाथ थामें बड़ी से बड़ी समस्याओं का मुकाबला करने को तैयार रहती हैं।

रुकी छोटी उम्र में लड़कियों की शादी

ललितपुर के तालबेहट इलाके के कलोथरा गांव की जल सहेली रामवती की कहानी साफ तौर पर बताती है कि परमार्थ ने बुंदेलखंड क्षेत्र में न केवल पानी की समस्या के समाधान के प्रयास किए बल्कि जनजागरण के जरिए लोगों की जिंदगी को भी गहरे रूप में प्रभावित किया है। रामवती कहती हैं, हमारे इलाके के अधिकतर पुरुष काम काज के सिलसिले में बाहर ही रहते हैं। महिलाएं यहां रहकर अपना घरबार चलाती हैं और बच्चों की परवरिश करती हैं। अधिकतर परिवारों के पास अपनी कोई जमीन नहीं। उन्हें न तो सरकारी योजनाओं के बारे में पता है न काम पाने के अपने अधिकारों के बारे में। परमार्थ की ट्रेनिंग ने उन्हें न केवल मनरेगा जैसी योजना का लाभ हासिल करने के लिए प्रेरित किया बल्कि अपने अधिकारों के बारे में भी जागरूक किया। इसी ट्रेनिंग ने उन्हें सिखाया कि उन्हें अपनी बच्चियों की शादी 18 से पहले नहीं करनी हैं। अब इस क्षेत्र में बाल विवाह का चलन समाप्त हो रहा है।

परमार्थ की ट्रेनिंग ने श्रम शोषण से बचाया

रामवती और दूसरी महिलाओं ने परमार्थ से ट्रेनिंग पाकर मनरेगा में नियमित काम हासिल किया है। वे अपने अधिकारों के बारे में पहले से अधिक सजग हैं। मनरेगा योजना के तहत काम मिलने पर उन सबसे अधिक काम लेने की कोशिश भी हुई लेकिन उन्हें पता था कि उन्हें कितना काम करना है लिहाजा वे श्रम शोषण का शिकार नहीं हुईं। अब मनरेगा में उनके जॉब कार्ड बन गए हैं। वे मनरेगा के नियम के मुताबिक अपना काम करती हैं और उसके बदले में पैसे पाती हैं। रामवती कहती हैं कि उनपर नियम विरुद्ध अधिक काम करने का दबाव बनाया गया लेकिन चूंकि उन्हें अपने काम के बारे में जानकारी मिल चुकी थी इसलिए वे ऐसे शोषण से बच सकीं। इसके अलावा परमार्थ की ट्रेनिंग ने उनके भीतर एक आत्मविश्वास दिया है। वे अब किसी से भी बात करने में न हिचकती हैं न सरकारी दफ्तरों तक में अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने से डरती हैं।

जल सहेलियों ने बना दी सड़क

अगर कहें कि जल सहेलियों ने बुंदेलखंड के जीवन को बदलने में बहुत बड़ा योगदान किया है तो गलत नहीं होगा। पानी की समस्या हो या जानकारी के अभाव में जिंदगी की दूसरी समस्याएं, सभी क्षेत्रों में जल सहेलियों के दखल ने बदलाव का रास्ता प्रशस्त किया है। दूर दराज के गांव से सड़क संपर्क का अभाव भी ऐसी ही एक बड़ी समस्या है, जो इस इलाके को पिछड़ेपन की ओर धकेलती है। लेकिन सड़क बनाकर भी जल सहेलियों ने गांव की जिंदगी बदल दी। सड़क बनाने की यही कहानी बताते हुए गुड्डी गर्व से भर जाती हैं। जल सहेलियों के श्रम से बनी सड़क ने बच्चों को स्कूल के नजदीक कर दिया। एक सड़क की मरम्मत ने सात-आठ गांवों की मुश्किलें समाप्त कर दी। अपनी समस्याओं के लिए खुद से मेहनत करने का जज्बा रखने वाली ये जल सहेलियां हर तरह के सार्वजनिक कामों में खुद को झोंकने के लिए तैयार रहती है। सामूहिकता का ये बोध ही उनके जीवन की सफलता का मूल मंत्र है।

उम्मीद नहीं थी, इतना कुछ बदल जाएगा

तालबेहट की श्रीकुंवर को पहले यकीन ही नहीं था कि परमार्थ के लोगों की प्रेरणा से उनकी ओर उनके इलाके की जिंदगी बदल जाएगी। वे बहुत ही साफगोई से स्वीकार करती हैं कि पहले उन्हें लगा कि ये लोग केवल अपने फायदे के लिए उनका इस्तेमाल करना चाहते हैं। उनकी जिंदगी तो पानी के लिए संघर्ष करते बीती है और आगे भी उनकी किस्मत में यही संघर्ष लिखा है। लेकिन जब परमार्थ के लोगों ने कोशिशें नहीं छोड़ी तो वह उनके साथ काम करने को तैयार हुई। उन्होंने परमार्थ के साथ मिलकर अपने गांव के लिए चैकडैम बनाने का प्रस्ताव किया। प्रस्ताव तैयार करने के बाद मंजूर कराना और उसके लिए श्रम करने को गांव की महिलाओं को तैयार करना भी आसान नहीं था। लेकिन जब चैकडैम बनाने का प्रस्ताव पास हो गया और उसके लिए सामान भी आ गया तो उनके लिए लोगों को तैयार करना मुश्किल नहीं था। सबने मिलकर अपने इलाके में चैकडैम तैयार कर लिया। इस चैकडैम ने कम से कम सौ परिवारों की जिंदगी बदल दी। उनके पशुओं के पानी और खेतों की सिंचाई की व्यवस्था ने उन सबके जीवन में बहुत बड़ा बदलाव किया है।

मिला सम्मान, बदल गई जिंदगी

श्रीकुंअर कहती हैं ये ऐसा काम था जिसने न केवल हमारी जिंदगी आसान बना दी बल्कि हमें सामाजिक सम्मान भी दिया। मैं पढ़ी लिखी तो थी नहीं। किसी से बात करते हुए संकोच बहुत था। लेकिन परमार्थ ने हमारे भीतर एक नए तरह के आत्मविश्वास पैदा किया। अब हम मिलजुल कर काम करने की ताकत का मतलब जानते हैं। अपने गांव का चैकडेम बनाने के बाद हमने पड़ोस के गांव के लिए भी ऐसा प्रस्ताव पास कराने में मदद की। लोगों को उस काम के लिए जोड़ा। उन्हें भी इस तरह की कोशिशों का फायदा हुआ है। उनके गाव में भी पानी की समस्या का समाधान हुआ। अब इलाके में हमारी पूछ और हमारा सम्मान है। परमार्थ ने तो हमारी जिंदगी ही बदल दी। हम गांव की महिलाएं अब ऐसा सोचती हैं कि परमार्थ ने किस तरह हम सबकी जिंदगी में एक नया आत्मविश्वास पैदा किया है। अब तो हम सभी बहनों को इसी तरह से मिलजुल कर अपनी जिंदगी को बदलने की प्रेरणा देते हैं।

दिल्ली-लखनऊ तो कभी ख्वाब भी नहीं था

सोना को इस बात का बहुत गर्व है कि जल सहेली के रूप में काम करते हुए उन्हें लखनऊ और दिल्ली में जाकर अपनी उपलब्धियां बताने का मौका मिलता है। तालबेहट के बेहद पिछड़े इलाके में रहते हुए कभी सोचा ही नहीं था कि यहां पानी को लेकर स्थिति में कोई बदलाव आएगा। पानी की कमी से इंसान तो जूझ ही रहे थे, जानवरों के लिए पानी की बड़ी समस्या थी। पानी के बगैर जानवरों का जीवन दूभर था। गर्मियों में उन्हें पानी के लिए कोसो भटकना होता था..कई बार तो इसके बावजूद उन्हें पानी नहीं मिलता। लेकिन चैकडैम योजनाओं पर काम करके उन्होंने अपने गांव के लोगों की जिंदगी बदल दी। सूखे पड़े हैंड पंपों को दुरुस्त कराने के लिए तहसील कार्यलय की भागदौड़ हो या किसी सरकारी योजना का लाभ उठाने का सवाल, अब वे गांव की महिलाओं के साथ मिलकर ये जिम्मेदारी खुद उठाती हैं। गांव में महिलाओं बच्चियों में अब आत्मविश्वास है कि वे अपनी समस्याओं के समाधान के लिए खुद ही सक्षम है। परमार्थ के संपर्क में आने से पहले यह सोच नहीं थी। सोना कहती हैं परमार्थ नहीं, ये तो महिलाओं की जिंदगी में बदलाव लाने वाला चमत्कार है।

परमार्थ से जुड़ना एक सपने के पूरा होने जैसा

झांसी जिले के बबीना ब्लॉक के गांव सिमरावाड़ी की मीरा उन जल सहेलियों में शामिल हैं जिन्होंने अपने इलाके की समस्याओं के लिए सबसे अधिक संघर्ष किया है। वे पंचायत चुनाव में हिस्सा लेकर अपने गांव की सेवा के लिए प्रयासरत हैं। बुंदेलखंड के आम गांव की तरह उनके गांव में भी पानी की समस्या विकट थी। मीरा और उसके गांव के अधिकतर लोग इस समस्या को अपने जीवन के सच के रूप में स्वीकार कर चुके थे। लेकिन करीब तीन साल पहले किसी काम से वह बबीना गई थीं। वहां उन्होंने एक जगह कुछ लोगों को कोई बैठक करते देखा। वहां और भी लोग खड़े थे। भीड़भाड़ की वजह से उनका ध्यान उनकी ओर गया और तब पता चला कि इलाके में पानी की समस्या के समाधान के लिए परमार्थ समाजसेवी संस्था के लोग कुछ प्लान कर रहे हैं। मीरा की उत्सुकता बढ़ी और वे खुद ही पहल करके संस्था के साथ जुड़ गईं। मीरा ने अपने इलाके में जल समस्या के समाधान के लिए परमार्थ के साथ कोशिशें तेज की और उसका सकारात्मक नतीजा निकला। उन्हें यह काम करते हुए गर्व का भी अहसास हुआ।

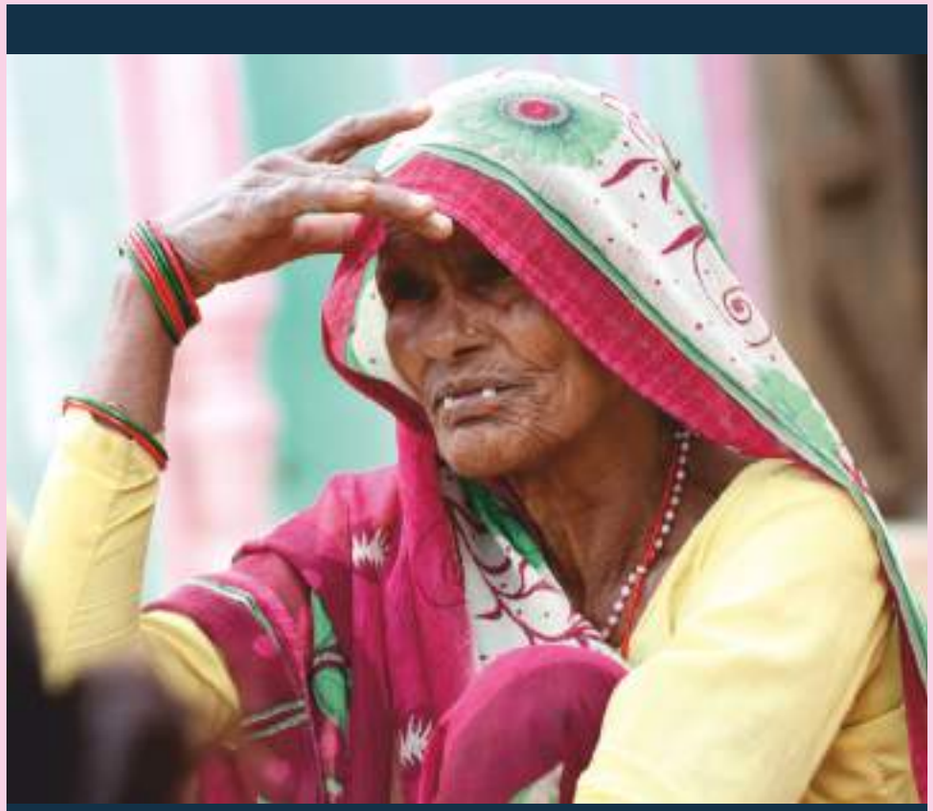

ये ट्रेनिंग नहीं जीवन जीने की कला है

परमार्थ को लेकर मीरा के अनुभव काफी विस्तृत हैं। उन्होंने परमार्थ के साथ ट्रेनिंग की है। मीरा कहती हैं, परमार्थ की ट्रेनिंग ने हमारे भीतर आत्मविश्वास पैदा किया और हमें अपने अधिकारों के बारे में पता चला। हमें पता ही नहीं था, कि यदि हमारे गांव का हैंड पंप खराब है या उससे पानी नहीं आ रहा है तो हमें कहां जाना चाहिए। लेकिन हमारी ट्रेनिंग ऐसी हुई कि हमने अपने अधिकारों के बारे में जान लिया है। हमें पता ही नहीं था कि इन सब काम के लिए गांव के प्रधान के पास बजट होता है। करीब 15-16 हजार लोगों का ये गांव गिनती के हैंड पंपों पर निर्भर था। पानी के लिए सभी को संघर्ष करना पड़ता था। हम जल सहेलियों ने मिलकर प्रयास तेज किए और आज हमारे गांव में पर्याप्त संख्या में हैंडपंप लगे हैं। उनमें किसी तरह की दिक्कत आने पर हम उसके लिए सामूहिक प्रयास करते हैं और उसका समाधान मिल जाता है। जागरुक महिलाओं का जत्था अब बच्चों की परवरिश का सवाल हो या उनकी पढ़ाई लिखाई का सवाल, सभी के बारे में उचित फैसला करने का हौसला रखता है। पानी के उचित इस्तेमाल को लेकर हम लोगों के बीच जागरुकता बढ़ाते हैं। हमारी कई समस्याएं तो इसलिए बड़ी थी क्योंकि हमें उनसे निजात पाने के बारे में ही पता ही नहीं था।

पानी : किल्लत से प्रबंधन तक

हमने परमार्थ की ट्रेनिंग में यह जाना कि कैसे पानी की बचत करनी है? कैसे बरसात के पानी का भविष्य के लिए इस्तेमाल करना है? हमने इसको लेकर अपने गांव में काफी चर्चा की। नई पीढ़ी की औरतों के साथ लगातार संवाद करते हैं ताकि वे इस समस्या को समझ सकें और इसके समाधान करने को लेकर वे सोच सकें। जल सहेली के रूप में काम करते हुए हमने यही जाना कि अगर कोई ठान ले तो कुछ भी कर सकता है। पानी की मुश्किल को हमने किस्मत मान लिया था, लेकिन एक कोशिश से हमारी ही नहीं पूरे इलाके की तकदीर और तस्वीर बदल गई। आज हमें पता है कि बरसात के पानी को कुंए तक पहुंचाने के लिए क्या तरकीब लगाई जाए। किचेन में बर्तन धोने के बाद बचे पानी को बाग में पहुंचाकर कैसे सब्जी उगाई जाए। छोटी-छोटी बातें हमारे जीवन को बड़े रूप में प्रभावित करने लगी हैं। ये परमार्थ से मिले हुनर का असर है। जिस तरह हमारी जिंदगी में बदलाव आया है हम चाहते हैं कि आने वाली पीढ़ी इसी तरह के अपनी जिंदगी को खुशहाल बनाए।

सामाजिक विरोध की टीस

मीरा की कहानी यह भी बताती है कि बुंदेलखंड की महिलाओं में बदलाव का ये दौर कई उथल पुथल से गुजरा है। सामाजिक बेड़ियों में जकड़े बुंदेलखंड की महिलाओं का घर से बाहर निकलना ही सबसे बड़ा बदलाव है। पति को खो देने के बाद अकेली महिला के रूप में मीरा का घर से बाहर निकलना भी शक की नजर से देखा गया। उनके बच्चों तक को भरमाने की कोशिश हुई। लेकिन मीरा बदलाव की ओर बढ़ने का ठान चुकी थी। आगे बढ़ने का इरादा कर चुकी थी। मीरा कहती हैं, नई पीढ़ी की महिलाओं को भी ऐसी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लेकिन मैंने उनके पतियों को भी संस्था से जोड़कर और उन्हें आगे बढ़ने का रास्ता दिखाकर इस रोड़े को हमेशा हमेशा के लिए समाप्त कर दिया है। आज हमारे साथ 300 से अधिक जल सहेलियां जुड़ी हैं जो हर तरीके से सामाजिक काम के लिए हर वक्त तैयार रहती हैं और सक्षम हैं। वे अपने अधिकारों के लिए बड़े से बड़े अधिकारियों तक पहुंच जाती हैं। मीरा को उम्मीद है कि पंचायत सदस्य के रूप में चुनाव जीत कर वह अपने सामाजिक दायित्वों का दायरा और बड़ा कर पाएंगी।

हम जल सहेलियों ने बुंदेलखंड की पहचान बदल दी

सिमराबाद की मीना को जल सहेली के रूप में आगे बढ़ने में उनके पति और परिवार ने पूरा साथ दिया। मीना कहती हैं कि परमार्थ की ट्रेनिंग ऐसी है कि हम महिलाओं में अपनी ताकत का अहसास आ जाता है। हमें अपने अधिकारों के बारे में पता हो जाता है। यही वह ताकत है जिसके सहारे हम अपनी हर समस्या का समाधान करते चले जाते हैं। परमार्थ से जुड़ने से पहले हम सोच भी नहीं पाते थे कि किसी काम के लिए हम अपने इलाके के प्रधान या तहसील में अफसरों के सामने अपनी समस्या रख पाएंगे। लेकिन अब ये हम जल सहेलियों के लिए छोटा सा काम है। हमने इस संस्था से जुड़कर सामाजिक बदलाव के लिए भी काम किया है। जल से महत्व को समझकर अपना जीवन आसान कर लिया। बुंदेलखंड तो पानी की कमी के लिए जाना जाता है लेकिन अब हम जल सहेलियां इस इलाके की पहचान बन चुकी हैं। महिलाओं की जिंदगी में इस बदलाव लाने के लिए परमार्थ की कोशिशों की जितनी तारीफ की जाए कम है।

नई सोच ने बदल दी हमारी जिंदगी

बबीना बलॉक के खजरा बुजुर्ग की मीरा ने जल चेतना के साथ सामाजिक सुरक्षा को लेकर भी ठोस पहल की है। जल सहेली के रूप में काम करते हुए वे अपने गांव को अधिकतम सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने की पहल की। अपने गांव की बुजुर्ग महिलाओं का विधवा पेंशन दिलाने में मदद की। दफ्तरों की भागदौड़ के बारे में सुनकर ही लोग सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने का साहस नहीं कर पाते। लेकिन मीरा उन्हें अपने अधिकारों के बारे में बताती हैं। उसे हासिल करने में उनकी मदद करती हैं। गांव के छोटे बच्चों को स्कूल जाने के लिए भी प्रेरित करती हैं। बच्चों को शिक्षित बनाने के लिए उनकी माताओं को प्रेरित करने का काम हो या उन्हें स्कूल तक ले जाने का काम, मीरा इसे अपने जीने का संकल्प बना चुकी हैं। परमार्थ की ट्रेनिंग ने उन्हें ये हौसला और हिम्मत दिया है। मीरा कहती हैं परमार्थ से जुड़ने से पहले हमारी जिंदगी और सोच कुछ और थी और अब सबकुछ बदल गया है। हमारी सोच में बहुत बड़ा बदलाव आया है और इसी सोच के साथ हम अपने समाज को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे हैं। मीरा और उनके साथ काम करने वाली जल सहेलियां जैविक खाद बनाने का काम भी करती हैं। इससे उन्हें आर्थिक लाभ भी हुआ है।

सपना पूरा करने का अवसर दिया है परमार्थ ने

दुर्गापुर की नीलम कहती हैं, परमार्थ ने हम जैसी तमाम महिलाओं को अपने सपने पूरा करना का हौसला दिया है। समाज की सोच को देखते हुए न जाने कितनी महिलाएं और लड़कियां अपने सपने मन में ही दफन कर देती हैं। लेकिन परमार्थ के संपर्क में आने के बाद हमें लगा कि हमारे सपनों को यहां पंख मिल सकते हैं। हम भी उड़ान भर सकते हैं। हम भी समाज को कुछ देने की सोच सकते हैं और परमार्थ की ट्रेनिंग से यह सब संभव हो सका। हम जैसी कई जल सहेलियां आज परमार्थ से जुड़कर आत्मनिर्भरता का अहसास कर रही हैं। हमें इस बात का बहुत गर्व है कि हम सभी ने मिलकर पानी की कमी से जूझ रहे बुंदेलखंड को न केवल पानीदार बनाने का सपना पूरा करने की दिशा में ठोस काम किया है बल्कि सामाजिक दूरी को मिटाने में भी अपनी भूमिका निभाई है। हम आर्थिक रूप से कमजोर जल सहेली बहनों को अपने प्रयास से छोटे-छोटे काम करने को प्रेरित करते हैं बल्कि बाजार में उनके उत्पाद बेचने में भी मदद करते हैं। किचेन गार्डन में सब्जी उगाने वाली जल सहेलियों को भी हमने इसी तरीके से आर्थिक ताकत दी है।

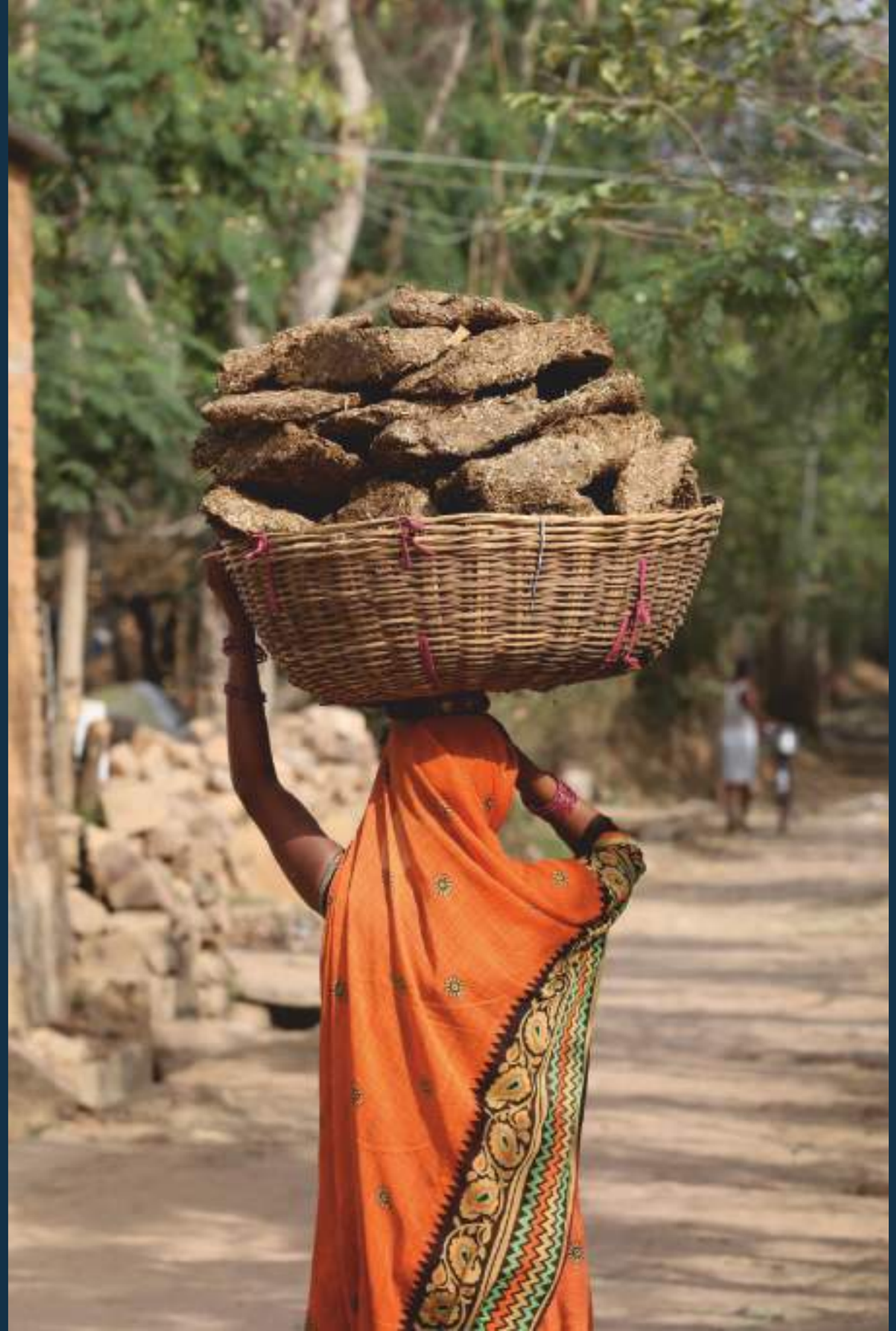

काम से पहचान मिली

बंडा की मीरा झा ने जब परमार्थ के साथ काम शुरू तो उसकी हंसी उड़ाई गई। इलाके के लोग कहते कि ये सिर्फ झांसी के चक्कर काटती रहती है, इसके पास और कोई काम नहीं। लेकिन मीरा झा कहती हैं कि इन्होंने लोगों की बातों पर ध्यान देने के बजाय अपने काम पर ध्यान रखा। उन्होंने इलाके की महिलाओं को जल सहेली योजना से जोड़ना शुरू किया। शुरुआत में पांच महिलाएं उनके साथ जुड़ीं। फिर जल्दी ही ये संख्या बढ़कर दस और अब पच्चीस हो चुकी हैं। मीरा सभी के साथ मिलकर अपने इलाके को पानी की समस्या से मुक्ति दिलाने की कोशिश करती रहती हैं। परमार्थ के लोग उनका मार्गदर्शन करते हैं, सहयोग करते हैं। मीरा और उनकी सहेलियों ने मिलकर अपने इलाके में किचेन गार्डन पर तेजी से काम करना शुरू किया है। रसोई में इस्तेमाल के बाद पानी सीधे इनके किचेन गार्डन में पहुंचता है और उससे सब्जियां उपजाई जा रही हैं। महिलाओं में इससे स्वाबलंबन आ रहा है। महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की वजह से उनको सामाजिक सम्मान भी मिलने लगा है। मीरा कहती हैं, हमने काम से अपनी पहचान बनाई है।

अब पड़ोस को हरा भरा बनाने की कोशिश

मीरा अब अपने आसपास के इलाके में भी सक्रिय हैं। उनका कहना है कि जिस तरह हमने अपने इलाके में पानी की समस्या से निजात पाने के लिए प्रयास किया और कामयाबी पाई, उसी तरह की कोशिश मैं आसपास के गांवों के लिए भी करती हूं। मेरे साथ की सहेलियां भी इस काम में हमारे साथ रहती हैं। हम सभी मिलकर पास पड़ोस के गांवों में महिलाओं के साथ बैठकें करके उन्हें समझाते हैं कि कैसे मिलजुल कर इस समस्या का हल निकाला जा सकता है। हम उन्हें सब्जियां उगाने के लिए बीज मुहैया कराते हैं। प्याज, लौकी, पालक के बीज उपलब्ध कराकर उन्हें थोड़े थोड़े इलाके में सब्जी उगाने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्हें कम पानी से फसल उगाने के तरीके बताते हैं। जब लोगों को इसका फायदा नजर आने लगा तो उनका सम्मान भी मिलता है। अधिक से अधिक लोग इस काम से जुड़ना चाहते हैं। हम उन्हें मिल जुलकर अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए लगातार कोशिश करने की प्रेरणा देने के काम में जुटे हैं। इस काम में परमार्थ का सहयोग हमेशा मिलता है। अब तो हमारा जीवन पानी जुटाने और बचाने के लिए ही समर्पित है।

पानी के लिए काट दिया पहाड़

पानी के लिए पहाड़ों से भिड़ जाने का पराक्रम बबीता राजपूत और उन जैसी करीब सौ से भी अधिक जल सहेलियों ने दिखाया है। बुंदेलखंड की ये कहानी जीवटता की ऐसी मिसाल है जिसपर उन सभी को गर्व है जो इस योजना से जुड़े हैं। बबीता बताती हैं, परमार्थ के संपर्क में आने के बाद हमें लगने लगा था कि पानी से जूझ रहे हमारे इलाके को जरूर बड़ी राहत मिलेगी। लेकिन हम सब मिलकर इतनी बड़ी उपलब्धि हासिल कर लेंगे इसका अनुमान नहीं था। शुरुआत में हमने अपने गांव में चेकडैम बनाए। उससे पानी की समस्या काफी हद तक कम हुई। गांव वालों के पशुओं के लिए पानी और नहाने धोने के लिए पर्याप्त जल मिल गया। चेकडैम बनाने की वजह से इलाके के जलस्तर में भी सुधार होने लगा। सूखे पड़े हैंडपंपों में पानी आने लगा। हमारे सामूहिक प्रयास से कुछ नए हैंडपंप भी लगवाए गए। परमार्थ का सहयोग और हम जल सहेलियों का साहस रंग दिखाने लगा।

जल सहेलियों का लोहा सभी मानते हैं

इसके बाद जल सहेलियों की बैठक में ही प्रस्ताव आया कि यदि गांव के तालाब को पास के बछेरी नदी में जाने वाले जल की धारा को मोड़कर गांवो की ओर कर दिया जाए तो हमेशा के लिए पानी की समस्या का समाधान हो जाएगा। यह काम आसान नहीं था। इसके लिए पथरीली जमीन और पहाड़ को काटने की जरूरत थी। लेकिन सबने मिलकर तय किया कि यह काम हम चुनौती के तौर पर लेंगे। जब आसपास की महिलाओं ने यह तय कर लिया कि यह काम हमें किसी हाल में करना है तो पुरुष भी तैयार हो गए। सबने मिलकर दिन रात मेहनत की। करीब ढाई सौ जल सहेलियां और पुरुषों ने कई दिनों की मेहनत से यह चमत्कार कर दिखाया। इस काम की वजह से इलाके में हमारे सोच और मेहनत की चर्चा होती है। परमार्थ ने हमें जो रास्ता दिखाया उसकी चर्चा होती है। अब तो लोग यही कहते हैं कि जल सहेलियां जो सोच लें उसे कर दिखाती हैं।

PARMARTH

www.parmarthindia.com

Parmarth Samaj Sevi Sansthan

Near Naza Hospital, 2nd Street
Shivaji Nagar, Jhansi, U.P., Pin 284001
Phone: 05162-254910, 258412, 0510-2321051
Email : parmarths@gmail.com
website : www.parmarthindia.com